13

समकालीन भारतीय कला
Contemporary Art of India

13.0 भूमिका

मुगल तथा पहाड़ी चित्रकला तथा पांरम्परिक मूर्तिकला के अंत के पश्चात् 19वीं शताब्दी में भारतीय कला के क्षेत्र में कोई विशेष विकास नहीं हुआ। इसी बीच अंग्रेज शासकों ने भारत के मुख्य शहरों में कला विद्यालयों की स्थापना की। इन विद्यालयों में मुख्य रूप से यूरोपीय कला शैली की शिक्षा दी जाती थी। दक्षिण भारत में *'राजा रवि वर्मा'* पश्चिमी यर्थाथवादी कला शैली में पौराणिंक तथा धार्मिक विषय वस्तु पर चित्र बना कर बहुत लोकप्रिय हुए। वे दक्षिण भारत के स्वयं शिक्षित चित्रकार थे। बंगाल के **अबनीन्द्रनाथ ठाकुर'** ने पारंपरिक रीति के आधार पर एक नई चित्र–रीति प्रस्तुत की। उन्होंने अपने योग्य शिष्यों के साथ बंगाल स्कूल के नाम से इस रीति का प्रचार किया । इन शिष्यों में से **नन्दलाल बोस, विनोद बिहारी, शारदा वकील** जैसी कला हस्तियां प्रमुख थीं। जिस समय भारत में यह चित्ररीति लोकप्रिय हो रही थी उसी समय पेरिस से शिक्षा प्राप्त **'अमृता शेरगिल'** भारत आ पहुंची। अमृता अपनी चित्रशैली में पश्चिमी तकनीक के साथ भारतीयता का संगम करने में सफल हुई। दूसरी ओर विश्व विख्यात कवि **'रबीन्द्रनाथ ठाकुर'** ने सतसठवें (67) वर्ष में चित्र बनाना शुरू किया जिन के चित्रों में अभिव्यंजनामय रूप बहुत सुंदर तरीके से प्रकट हुआ। एक अन्य कलाकार **'जामिनी राय'** ने लोक कला से प्रेरित होकर उसे आधुनिक रूप दिया और इससे एक नई शैली का जन्म हुआ। इन भारतीय समकालीनों की चित्रकला से प्रेरित होकर कई युवा कलाकार नई–नई रीतियों द्वारा कला सृजन करने लगे। इनमें बंगाल के 'कलकत्ता ग्रुप' तथा बम्बई के 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' का भारतीय समकालीन कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।

13.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ–सामग्री के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जाएंगे कि –

- आधुनिक कला के क्रमिक विकास के विषय में व्याख्या और वर्णन कर सकेंगे;
- दिए गए समकालीन चित्रकार तथा मूर्तिकारों को पहचान सकेंगे;
- दिए गए चित्रों तथा मूर्तियों के माध्यम से आकार, विषय वस्तु तथा संग्रह–स्थल का वर्णन कर सकेंगे;
- मूर्तियों तथा चित्रों के नाम भी बता सकेंगे।

नारी का चेहरा

13.2 नारी का चेहरा

शीर्षक	–	*नारी का चेहरा*
माध्यम	–	*स्याही तथा जल रंग*
रचनाकाल	–	*1937*
आकार	–	*50.5X53 से.मी.*
चित्रकार	–	*रबीन्द्रनाथ ठाकुर*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

शांति निकेतन में रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने **कला भवन** का निर्माण किया और अबनीन्द्रनाथ ठाकुर, नन्दलाल बोस आदि कलाकारों को ले आए परन्तु वह स्वयं बंगाल स्कूल द्वारा प्रभावित नहीं थे। रबीन्द्रनाथ अवचेतन मन में आए हुए चित्रों का चित्रण करते थे। मुख्य रूप से वह रेखांकन करते थे। आवश्यकतानुसार हल्का जलरंग का लेप भी प्रयोग किया है। उन्होंने हल्के तथा गहरे रंग का प्रयोग किया है। उनके इस चित्र **औरत** (बूमनफेस) में सिर साड़ी से ढका है। उसके होठों का चित्रण इस प्रकार किया है जैसे वह अभी कुछ कहने वाली है। औरत के चेहरे पर कोमल तथा हल्के स्याही का लेप देकर करूण रस का सृजन किया गया है।

पाठगत प्रश्न (13.2)

रिक्त स्थान पूर्ण करो

(क) शांतिनिकेतन में रबीन्द्रनाथ ने .....का निर्माण किया।

(ख) इस चित्र में रबीन्द्रनाथ ने .....का प्रयोग किया है।

(ग) रबीन्द्रनाथ .....मन से आए हुए चित्र का चित्रण करते थे।

दुल्हन का श्रृंगार

13.3 दुल्हन का श्रृंगार

शीर्षक	–	*दुल्हन का श्रृंगार*
माध्यम	–	*कैनवस पर तेल रंग*
रचनाकाल	–	*1937*
आकार	–	*144.5X86 सें.मी.*
चित्रकार	–	*अमृता शेरगिल*
संग्रहालय	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

"दुल्हन का श्रृंगार" अमृता शेरगिल का एक विख्यात चित्र है जिसमें पाँच मानव आकृतियाँ हैं। इस चित्र में दुल्हन तथा उसकी सहचरियों के शरीर के रंगों का भेद, चित्र के संयोजन को परिपूर्ण करता है। चित्र की पृष्ठभूमि में अमृता के मनपसंद धुंधले हरे रंग के आगे 'बैंगनी', गुलाबी, हरा, सफेद तथा भूरे रंग के प्रयोग से सुंदरता बहुत बढ़ गई है।

आमतौर पर अमृता अपनी कला में आत्मा के गहरेपन को अभिव्यक्त करती थी। 'दुल्हन का श्रृंगार' चित्र की छंदमयता कलाकृतियों की हस्तमुद्रा से और भी स्पष्ट हुई है। निःसंदेह भारतीय नाट्य कला की इन मुद्राओं ने अमृता को प्रभावित किया। चित्र के सामने दो मिट्टी के घड़े हैं। एक सहचरी दुल्हन के केश संवार रही है तथा दूसरी सहचरी हाथ में बर्तन लिए खड़ी है। दुल्हन के दोनों हाथ लाल रंग से रंगे हैं जो आमतौर पर विवाह के समय भारत में प्रचलित है। अमृता शेरगिल की चित्र–संयोजन में बहुत ही सरल रंगों का प्रयोग किया गया है। वे अजन्ता के भित्ति–चित्र तथा राजपूताना लघुचित्रों द्वारा प्रभावित थीं। उन्होंने यूरोपीय कला शिक्षा से प्राप्त तकनीकी ज्ञान तथा शैली के साथ भारतीय प्रभाव को बहुत ही संतुलित रूप में अपने चित्रों में प्रस्तुत किया है।

पाठगत प्रश्न (13.3)

रिक्त स्थान पूर्ण करें

(क) आमतौर पर अमृता अपनी कला द्वारा .....के गहरेपन को .....करती थी।

(ख) अमृता की संयोजन रीति बहुत ही .....थी।

(ग) चित्र में दुल्हन के हाथ .....से रंगे हैं।

साँओताल परिवार

13.4 साँओताल परिवार

शीर्षक	–	*साँओताल परिवार*
माध्यम	–	*कांक्रीट*
रचनाकाल	–	*1938*
आकार	–	*ऊँचाई 290X200X315 सें.मी.*
मूर्तिकार	–	*रामकिंकर बैज*
संग्रह	–	*विश्व भारती, शांति निकेतन, प. बंगाल*

सामान्य परिचय

रामकिंकर की कला–शिक्षा शांति निकेतन के विश्व भारती में हुई थी। नन्दलाल बोस उनके गुरू थे तथा विनोद बिहारी मुखर्जी, शंख चौधरी आदि विख्यात कलाकार उनके सहपाठी थे। रामकिंकर भारतीय समकालीन कला के प्रथम मौलिक आधुनिक मूर्तिकार हैं। उन्होंने चित्रकला में भी अपनी प्रतिभा को स्पष्ट किया है। उनकी कई मूर्तिकलाओं ने कला रसिकों को मोहित किया है एवं अगली पीढ़ी के कलाकारों को प्रेरित भी किया है। उनकी मूर्तिकलाओं में दो सुन्दर यक्ष तथा यक्षिणी की मूर्तियां नई दिल्ली में रिर्जव बैंक आफ इंडिया के मुख्य द्वार के दोनों ओर शोभायमान हैं। उन्होंने बहुत साहस के साथ अप्रचलित विषय वस्तु तथा माध्यम का प्रयोग किया। माध्यम के लिए उन्होंने सीमेंट तथा रोड़ी से मिलाकर कांक्रीट द्वारा मूर्तियों में खुरदरी सतह बनाई। 'साँतल परिवार' इसी माध्यम से बनाया गया है। इस मूर्ति में साँतल परिवार जैसे आदमी, स्त्री तथा बच्चे गाँव छोड़कर शहर में आजीविका के लिए जा रहे हैं। उनका पालतू कुत्ता भी उनके साथ है। इस मूर्ति में मूर्तिकार ने बहुत ही मार्मिकता के साथ ग्रामीण समाज की दुर्दशा का वर्णन किया है।

पाठगत प्रश्न (13.4)

सही उत्तर छाँट कर लिखें

(क) "साँओताल परिवार" की मूर्ति बनी है
- (i) बलुआ पत्थर से
- (ii) कंक्रीट से
- (iii) कांस से

(ख) दिल्ली में रिज़र्व बैंक के द्वार पर लगी मूर्तियों का मूर्तिकार है
- (i) डी.पी. राय चौधरी
- (ii) रामकिंकर
- (iii) धनराज भगत

(ग) मूर्तिकार ने शिक्षा प्राप्त की थी –
- (i) विश्व भारती में
- (ii) दिल्ली कालेज ऑफ आर्ट में
- (iii) जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में

मदर टेरेसा

13.5 मदर टेरेसा

शीर्षक	–	*मदर टेरेसा*
माध्यम	–	*कैनवस पर तेज रंग*
रचनाकाल	–	*1988*
आकार	–	*233X128 cm*
चित्रकार	–	*एम. एफ. हुसैन*
संग्रह	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

समकालीन भारतीय कला में एम. एफ. हुसैन का योगदान महत्वपूर्ण है। अपनी मेहनत तथा प्रतिभा के बल पर हुसैन समकालीन कलाक्षेत्र की चोटी पर पहुंचे हैं। अपने चित्रों में हुसैन ने पौराणिक कहानियों के साथ आधुनिक जीवन धारा का अद्भुत रूप से सामंजस्य किया है। प्रारंभिक जीवन में वे फिल्म आदि के विशाल बैनर चित्रण करते थे। इन अनुभवों के कारण हुसैन बहुत ही आसानी से विशाल आकार के कनवैस पर चित्रण करते हैं।

मदर टैरेसा के इस चित्र में हुसैन ने इस महान समाज सेविका के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। मदर टैरेसा ने अपनी सारी जिंदगी बेघर और रोगग्रसित गरीबों के लिए न्यौछावर की। इससे प्रभावित होकर हुसैन ने मदर टैरेसा पर बहुत सारे चित्र बनाए। हारिजन्टल इस संयोजन को तीन भागों में खम्बे द्वारा विभाजित किया गया है। खम्बे में पीला तथा हल्का भूरा रंग है जिसके बीच में आकृतियों को अंकित किया गया है। बाईं दिशा में मदर टैरेसा एक बच्चे को गोद में खिला रही है। यद्यपि चित्र में मुखाकृति के स्थान पर काला रंग प्रयोग किया गया है परन्तु नीले बार्डर की सफ़ेद साड़ी की विशेष नक्काशी के द्वारा मदर टैरेसा को पहचानने में कोई मुश्किल नहीं होती। चित्र के मध्य भाग में इसी तरह की दो आकृतियाँ हैं जिनमें एक हाथ आशीर्वाद देते हुए दिखाया गया है। चित्र में हारिजेन्टली लेटे हुई एक लाल आकृति को बनाया गया है। यह चित्र न केवल मदर टैरेसा के मानव जाति के प्रति प्रेम को दर्शाता है बल्कि दर्शकों को समाज के इस पीड़ित वर्ग के लिए दयावान भी बना देता है।

पाठगत प्रश्न (13.5)

रिक्त स्थानों को पूर्ण करें।

(क) हुसैन की चित्रकला में .....का और .....का मेल बंधन है।

(ख) मदर टैरेसा .....में रहती थी।

(ग) हुसैन प्रारंभिक जीवन में .....चित्रण करते थे।

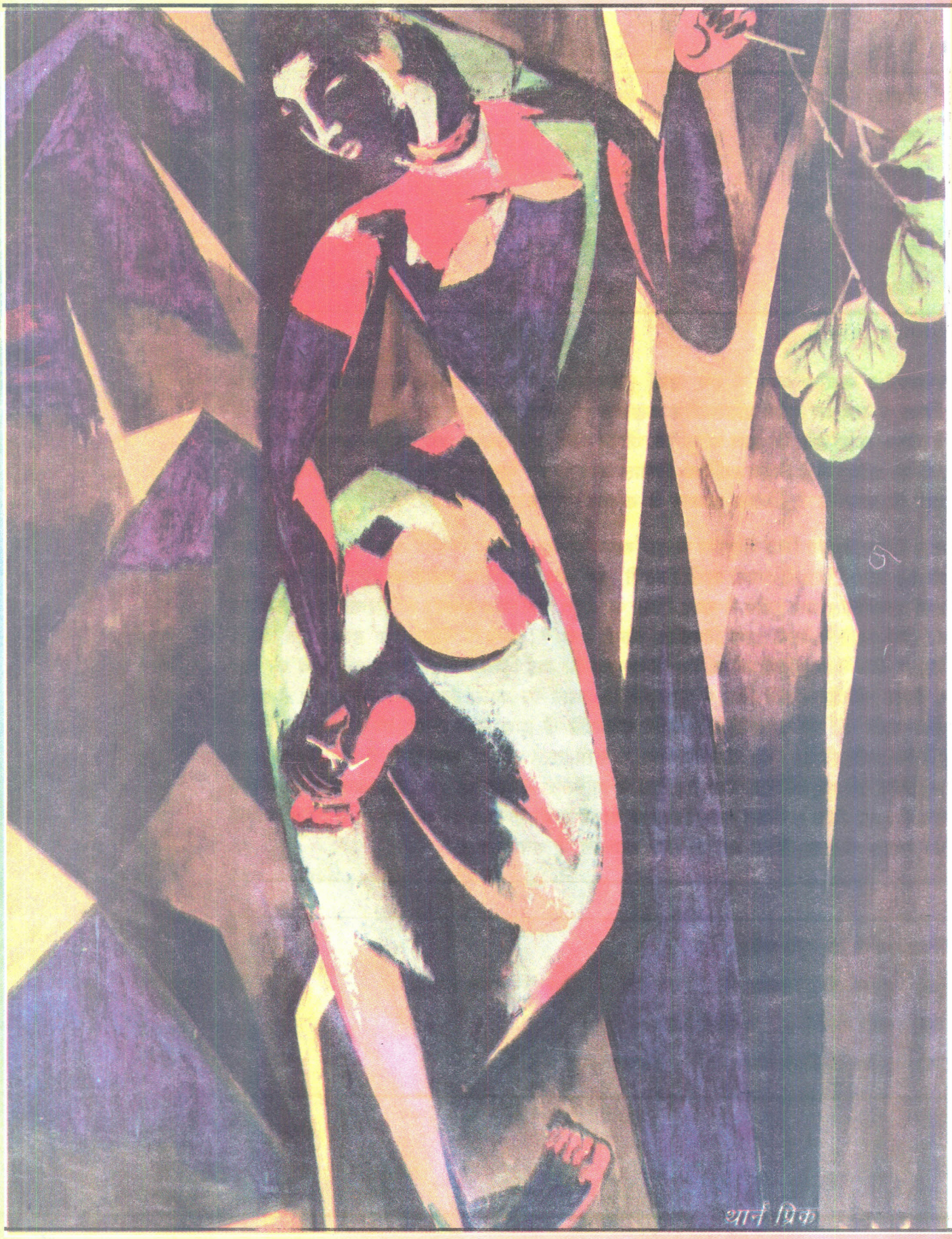
थार्न प्रिक

13.6 थार्न प्रिक

शीर्षक	–	*थार्न प्रिक*
माध्यम	–	*बोर्ड पर तेल रंग*
रचनाकाल	–	*1955*
आकार	–	*119.3X168 cm*
चित्रकार	–	*एन. एस. बेन्द्रे।*
संग्रहकार	–	*राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली*

सामान्य परिचय

इंदौर के ललित कला विद्यालय से शिक्षा प्राप्त **एन.एस. बेन्द्रे** न केवल एक महान चित्रकार थे, बल्कि बड़ौदा की एम. एस. यूनिवर्सिटी के कला विभाग के प्रधानाचार्य के साथ–साथ, समकालीन कला में ख्यातिमान कई चित्रकारों के शिक्षक भी थे। बेन्द्रे ने यद्यपि पश्चिमी रीति में कला शिक्षा प्राप्त की थी परन्तु उनके चित्र की शैली सम्पूर्ण रूप से भारतीय है। दिया गया 'थार्न प्रिक' एक ऐसा चित्र हैं जिसकी विषय–वस्तु भारतीय शास्त्रीय चित्रकला तथा मूर्तिकला में बहुत ही लोकप्रिय थी। वर्टीकल संयोजन में एक युवती को पैर से चुभे हुए कांटे को निकालते हुए दिखाया गया है। यह संयोजन अजंता के भित्ति–चित्रों की याद दिलाता है। पृष्ठभूमि में एक पहाड़ के साथ पेड़ भी दर्शाया गया है। यद्यपि चित्र की विषयवस्तु पारंपरिक भारतीय शैली की है पर इसे 'घनबादी' (क्यूबिस्ट) शैली की तकनीक में बनाया गया है। इस चित्र में मुख्य रूप से नीला, भूरा, लाल तथा पीला रंग प्रयोग हुआ है।

पाठगत प्रश्न (13.6)

रिक्त स्थान पूर्ण करें–

(क) बेन्द्रे ..... के प्रधानाचार्य थे।

(ख) उनकी .....संपूर्ण रूप से .....है।

(ग) "थार्न प्रिक" चित्र .....शैली की तकनीक में बनाया गया है।

13.7 सारांश :–

रवि वर्मा, अबनीन्द्रनाथ, रबीन्द्रनाथ, अमृता शेरगिल, जामिनी राय आदि मार्गदर्शकों के बाद, युवा पीढ़ी के कलाकार समकालीन कला का विकास करते रहे। इन कलाकारों में एन. एस. बेन्द्रे, एम. एफ. हुसैन, एफ. एन. सुज़ा, गणेश पाइन, एस. एच. रज़ा, बिकाश भट्टाचार्य, सतीश गुजराल आदि ने भारत के विभिन्न प्रांतों में नई–नई शैली में कला की रचना की। दक्षिण भारत की समकालीन कला के विकास में पाणिकर, श्रीनिवासुल, तथा चोलामंडल कलाकारों का योगदान महत्वपूर्ण है।

13.8 मॉडल प्रश्नः

1. "नारी का चेहरा" चित्र का वर्णन करें।
2. रामकिंकर ने मूर्ति बनाने में किस सामग्री का प्रयोग किया।
3. "दुल्हन का श्रृंगार" चित्र के संयोजन का वर्णन करें।
4. हुसैन की चित्र शैली पर एक अनुच्छेद लिखें।

13.9 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1 (क) विश्वभारती (ख) स्याही (ग) अवचेतन

13.2 (क) आत्मा, अभिव्यक्त (ख) सरल (ग) लाल रंग

13.3 (क) कंक्रीट (ख) रामकिकंर (ग) विश्वभारती

13.4 (क) पौराणिक कहानी, आधुनिक जीवन धारा
(ख) कोलकाता (ग) बैनर

13.5 (क) एम. एस. विश्वविद्यालय के कला विभाग
(ख) चित्रशैली, भारतीय
(ग) घनबादी

13.10 शब्दकोषः–

शान्तिनिकेतन – प. बंगाल के इस स्थान में विश्वभारती है

अवचेतन मन – मन का अज्ञात अंश

बैनर – बड़े बोर्ड पर विज्ञापन चित्र

हारिजंटल – क्षैतिज

घनबादी – वस्तु को ज्यामितिक आकार देकर कला रचना